विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग
DEPARTMENT OF
SCIENCE & TECHNOLOGY

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान
National Innovation Foundation - India
Autonomous Institute of the Department of Science and Technology, Govt. of India

संकल्पना एवं संकलन

हरदेव चौधरी

गणेश चन्द्र

संपादन

गणेश चन्द्र

लेआउट और डिज़ाइन

सोव्य राव

प्रकाशन वर्ष: 2024

कॉपीराइट@राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत

प्रकाशक:

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान

ग्रामभारती, अमरापुर, गांधीनगर-महुड़ी रोड,

गांधीनगर, गुजरात – 382650

फोन: 02764-261131/32/34/35/36/38/39

वेबसाइट: www.nif.org.in

ईमेल: info@nifindia.org

फोन: 02764-261131/32/34/35/36/38/39

हिन्दी पखवाड़ा - 2024

काव्य संकलन

निदेशक का संदेश

डॉ. अरविंद चं. रानडे
निदेशक,
राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत

प्रिय साथियों,

हमारे संस्थान में हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस को मनाने की एक समृद्ध परम्परा रही है, जिसमें हम हिंदी भाषा की महत्ता और इसके प्रति अपने प्रेम को प्रदर्शित करते हैं। इस वर्ष भी हमने हिंदी पखवाड़ा 2024 के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया, जिसमें कविता लेखन प्रतियोगिता भी शामिल थी। इस पुस्तक में कविता लेखन प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागियों की कविताओं को संकलित किया गया है। यह कविता संकलन न केवल हिंदी भाषा की शक्ति एवं समृद्धि को प्रदर्शित करता है, बल्कि हमारे संस्थान की प्रतिभा और रचनात्मकता को भी दर्शाता है। हमें उम्मीद है कि यह कविता संकलन आपको पसंद आएगा और हिंदी भाषा के प्रति आपका उत्साह और समर्थन बढ़ेगा। हम हिंदी भाषा के प्रति अपने प्रेम और समर्थन को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयास करते रहेंगे ।

हमारा संस्थान हमेशा से नवाचार एवं नवप्रवर्तन को बढ़ावा देने के लिए काम करता आया है, और साथ ही हमें गर्व है कि हमारे संस्थान में हिंदी भाषा के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए सतत प्रयास किया जा रहा है। हिंदी दिवस के अवसर पर हमें अपनी राजभाषा के प्रति अपने कर्तव्यों को याद दिलाने का अवसर मिलता है। हमें हिंदी को अपने दैनिक जीवन में अपनाने और इसकी महत्ता को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयास करते रहना चाहिए। हिंदी भाषा हमारी संस्कृति, हमारी पहचान और हमारे राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है। राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत की टीम को उनके अग्रणी प्रयासों, जुनून और संकल्प के लिए धन्यवाद देता हूं।

शुभकामनाओं सहित,

अरविंद चं. रानडे

प्रस्तावना

श्री हरदेव चौधरी
संयोजक- राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत

प्रिय पाठकों,

इस वर्ष हमने हिंदी पखवाड़ा 2024 के अवसर पर विभिन्न गतिविधियों और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया, जिसमें प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और हिंदी को और अधिक सशक्त बनाने का प्रयास किया। हिंदी पखवाड़ा 2024 के दौरान काव्य लेखन प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं के माध्यम से हिंदी को और अधिक समृद्ध बनाने का प्रयास किया। इस पुस्तक में प्रतिभागियों ने अपने नवीन विचारों को कविता की पंक्तियों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

मैं हर्ष के साथ यह कहना चाहता हूँ कि इस वर्ष काव्य लेखन में प्रतिभागियों ने अत्यधिक रुचि दिखाई। इस पुस्तक में संकलित कविताएँ हमारे देश की कृषि, संस्कृति, जैव विविधता, और हिंदी भाषा की महत्ता को प्रदर्शित करती हैं। हमने इन काव्य रचनाओं को एक संकलन का रूप देने का निर्णय लिया, जो राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत के लिए एक अनोखी पहल है। हिंदी पखवाड़ा 2024 के दौरान प्रतिभागियों द्वारा लिखित उत्कृष्ट काव्य रचनाओं को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास किया गया, जो राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत के अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी के प्रति संवैधानिक अनुपालन का स्मरण कराएगा और उन्हें हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा। यह काव्य संकलन रानप्र के पुस्तकालय में विशेष स्थान बनाएगा। अंत में, मैं राजभाषा हिंदी कार्य में सहयोग करने वाले सभी वरिष्ठ एवं कनिष्ठ साथियों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके परोक्ष और अपरोक्ष सहयोग से यह आयोजन सफल हो पाया।

शुभकामनाओं सहित,

हरदेव चौधरी

अनुक्रम

क्रम सं	काव्य शीर्षक	पृष्ठ संख्या
01	राजभाषा हिन्दी और विज्ञान – हिन्दी की व्यथा	9
02	संस्कृति - यह सभ्यता अंत्यत पुरानी	10
03	राजभाषा हिन्दी और विज्ञान – हिन्दी हृदय को जोडेगी, प्रगति ढेगा विज्ञान	12
04	नवाचार - नवाचार की लौ जलाकर, हम आगे बढ़ते जाएंगे	14
05	संस्कृति - संस्कृति की महिमा है, अद्वितीय अपार	15
06	नवाचार - आओ नवाचार से, अपनी पहचान बनाएं	16
07	संस्कृति - भारतीय संस्कृति	17
08	नवाचार - नवाचार का ये सफर	19
09	नवाचार - नवाचार है प्रगति का आधार	20
10	नवाचार - नवाचार से मुमकिन	21
11	संस्कृति – संस्कृति और तकनीक	23
12	संस्कृति - भारत की संस्कृति ने रचा इतिहास	25
13	संस्कृति - भारत की संस्कृति	26
14	संस्कृति - भारत की संस्कृति अनुपम	28
15	राजभाषा हिन्दी और विज्ञान – हिन्दी हमारी पहचान	29
16	कृषि - स्वर्णाली तन्तु	30
17	कृषि – कृषि, जो कि किसान के बिना है अधूरी	31
18	कृषि - कृषि, असतीत्व का आधार	32
19	कृषि - कृषि हमारी पहचान	33
20	कृषि - कृषि और किसान	34
21	कृषि - कृषि से पहचान	35
22	कृषि - बचपन की याद	36
23	जैव विविधता - जैव विविधता निरंतर चलता रहे	37
24	जैव विविधता - जैव विविधता में जीवन चक्र	38
25	जैव विविधता - जैव विविधता के रूप अनेक	39
26	जैव विविधता - जैव विविधता हैं अनमोल	40
27	जैव विविधता - पूर्वोत्तर से बुलावा	42
28	जैव विविधता - पेड़ बनना चाहता हूं	43
29	जैव विविधता - धरा कथा	44

राजभाषा हिन्दी और विज्ञान

हिन्दी की व्यथा

अपनों ने लूटा है, हर मीत झूठा है,
टूटी हुई आशा हूँ मैं, भूली हुई भाषा हूँ मैं।।

कभी शुशोभित देवों के श्रीमुख,
वीर-श्रृंगार-हास्य रस से शोभित,
जननी अगणित काव्य-ग्रंथो की,
आज उपहासित गाथा हूँ मैं।
टूटी हुई आशा हूँ मैं, भूली हुई भाषा हूँ मैं ।।

भूतकाल को संजोती, भविष्य के सपनों को पिरोती,
अंतर्मन के द्वंदों को उकेरती, प्रेमी रागी के मनोभावों को समेटती,
जीवन रुपी नाट्य मंच की आभा हूँ मैं।
टूटी हुई आशा हूँ मैं, भूली हुई भाषा हूँ मैं।।

चकाचौंध में डूबी दुनिया, माया से प्रेरित प्रभाव,
सांस्कृतिक हलाहल में बिसरी, एक अनूठी आभा हूँ मैं।
टूटी हुई आशा हूँ मैं, भूली हुई भाषा हूँ मैं।।

कौन बचाए, कौन संजोए कौन रखाए मेरा मान,
भारत वर्ष के ओजस्वी भूमिपुत्रों पर, आस बंधाए आशा हूँ मैं।
टूटी हुई आशा हूँ मैं, भूली हुई भाषा हूँ मैं।।

- डॉ. सत्या सिंह
रिसर्च एसोसिएट-III
विभाग : वार्ड और आईपीएम- कृषि
प्रथम पुरस्कार विजेता
रा. न. प्र. मुख्यालय गांधीनगर, गुजरात

*****

संस्कृति

यह सभ्यता अंत्यत पुरानी

यह संस्कृति हमारी सादियों पुरानी है,
अयोध्या से द्वारिका तक, हर घर की एक कहानी है।

हम जुड़े हमारे व्यवहारों से; हम जुड़े भावना के तारो से,
कश्मीर से कन्याकुमारी तक, बहते संस्कृति की एक जैसी ही कहानी है।
यह सभ्यता अंत्यत पुरानी है, हर घर में इसकी अपनी कहानी है।

हम सभ्यता में नर्मदा से गंगा तक घुले है,
हम हिमालय कि शिखाओ से, लंका के छोर तक जुड़े है,
ये राम रहीम में भेद न करे, ये खुद में रसखान और मीरा धरे।
ये संस्कृति न जाने भेद ऊँच व नीच का,
ये प्रेम व आस्था के धागे में सबको एक करे।
यह सभ्यता अंत्यत पुरानी है, हर घर ने इसकी अपनी कहानी है।

चले कुछ वीरों की गाथा से हम परिचय करते है,
आगे के स्वर नए रंगो से भरते है,
हमारी संस्कृति की भिन्नता का, गोरो ने संहार किया,
मन में बसे एकता की भावना पर प्रहार किया।
हम चले जो गुरुकुल से थे, वे अब स्कूलों तक आने लगे,
हम भूरे साहब बनकर, अपनो के ही रक्त में नहाने लगे।

ये संस्कृति से परंपरा एक बार फिर लौट कर आती है,
ये भगत सिंह ये नेता जैसे लोगो के बल से फिर खुद को बचाती है।
जो आये थे वे चले गए, कोई कहा इस संस्कृति से जीत पाता है,
इस भूमि मे जाये, लालो का परचम, फिर लहराता है।

अब फिर एक समस्या आन पड़ी, आओ अब इसपे बात करे,
जो पड़ रही है धूल संस्कृति के पन्नो पर, आओ अब इसको साफ करे।
हम विदेश की संस्कृति में, ऐसे घुलने वाले है,
हम भूल गये है परंपरा ऐसे तो, हम मिट्टी में मिलने वाले है।

आओ आज संकल्प करे, संस्कृति की रक्षा की नीव धरें ,
यह सभ्यता अंत्यत पुरानी है, हर घर में इसकी अपनी कहानी है।

- अंकिता द्विवेदी
वरिष्ठ परियोजना सहयोगी
विभाग: वार्ड - पशु चिकित्सा और मानव स्वास्थ्य
द्वितीय पुरस्कार विजेता
रा. न. प्र. मुख्यालय गांधीनगर, गुजरात

******

राजभाषा हिन्दी और विज्ञान

हिन्दी हृदय को जोडेगी, प्रगति देगा विज्ञान

भारत भूमि के आँगन में, अनंत भरा है ज्ञान,
उसी ज्ञान का एक पहलू है, भाषा और विज्ञान।
विभिन्न भाषाओं की यह भूमि रखे सबका मान,
हिन्दी हृदय को जोड़ेगी, प्रगति देगा विज्ञान ।

जहाँ दूजे देश विज्ञान को, अपनी भाषा मे दर्शाते है,
हम न जाने क्यों हिन्दी को, अपनाने से ही कतराते हैं।
अनेकता में एकता की उम्मीद, यह भाषा 'हिन्दी' हैं,
सबको सरलता से समझाने के, इस साधन को ही ठुकराते है।
आधुनिकता की भाषा सरल रहेगी, तो होगा भारत महान,
हिन्दी हृदय को जोड़ेगी, प्रगति देगा विज्ञान।

फ्रांस, रूस, चाईना की तरक्की, उनके लेखों में दिख जाती है,
जब इंटरनेट पर शोध पत्र की कहानी, उनकी भाषा में आती है,
वह तो कर रहे है, विज्ञान को अपने लोगों के लिए आसान,
और हम उनकी तकनीकों पर, होते रहते हैं हैरान।

कैसे होगा विज्ञान का लाभ, हमारे आम नागरिक को,
जब अंग्रेज़ी की खिटर-पिटर में, उलझा होगा हर इक तो।
क्यों न मिले एक दिशा में, हिन्दी और अनुसंधान,
हिन्दी हृदय को जोड़ेगी, प्रगति देगा विज्ञान।

विज्ञान सबको राह दिखाए, हर कोई इसका लाभ उठाए,
क्या व्यापारी, क्या वैज्ञानिक, सबको इक भाषा मिल जाए,
हिन्दी के माध्यम से, हर भारतीय एक हो जाए,
नवाचार और शिक्षा से, हर कोई अपना हुनर दिखाए।

संस्कृति की बढ़ोतरी हो, और हो शिक्षा प्रधान,
शिक्षा का धन जब पाएगा, विद्वान से लेकर किसान,
तब हिन्दी हमको जोडेगी, प्रगति देगा विज्ञान।

- डॉ. वर्षा धर
रिसर्च एसोसिएट-I
विभाग : वार्ड और आईपीएम – कृषि
द्वितीय पुरस्कार विजेता
रा. न. प्र. मुख्यालय गांधीनगर, गुजरात

*****

नवाचार

नवाचार की लौ जलाकर, हम आगे बढ़ते जाएंगे

नवाचार की लौ जलाकर, हम आगे बढ़ते जाएंगे,
राष्ट्र निर्माण के सपनों को, हर रोज सजाएंगे।
अमृतकाल की मिट्टी में, उम्मीदों का बीज रोपते,
हर कदम पर नव विचारों से, नई राह हम खोजते।

सुभाष ओला के बॉयलर से, ऊर्जा का संचार हो,
जयमीन पटेल के कूलर से, हर हदय को प्यार हो।
राष्ट्र निर्माण के सपनों को, हर रोज सजाएंगे,
नवाचार की लौ जलाकर, हम आगे बढ़ते जाएंगे।

पद्मश्री सी वी राजू की, कला को मिले सम्मान,
हर गांव-गली के नवाचार से, बढ़े देश का मान।
प्रोद्यौगिकी का हस्तांतरण, बने सबकी आवाज,
हर हाथ को रोजगार मिले, हो विकास का अंदाज।

राष्ट्र का अभिषेक हो, नव विचारों की धार से,
आत्मनिर्भरता का सूरज निकले, देश के हर द्वार से।
राष्ट्र निर्माण के सपनों को, हर रोज सजाएंगे,
नवाचार की लौ जलाकर, हम आगे बढ़ते जाएंगे।

- डॉ. अभिषेक वर्मा
रिसर्च एसोसिएट-I
विभाग : वार्ड और आईपीएम - इंजीनियरिंग
तृतीय पुरस्कार विजेता
रा.न.प्र नोएडा कार्यालय, उत्तर प्रदेश

*****

संस्कृति

संस्कृति की महिमा, अद्वितीय अपार

हर सुबह जब सुरज उगता है,
नए सपने, नए रंग लाता है,
धरती पर बिखरे हैं, अनगिनत फूल,
संस्कृति के रंग से हैं भरा यह धूल।

हर एक रस्म, हर एक त्यौहार,
संस्कृति का है, अद्भुत आधार,
सदियों से चली आ रही है परंपरा,
जिसमे छिपा है मानवता का सार।

गंगा की धारा, था हिमालय की चोटी,
संस्कृति की बातें, अद्भुत है सबकी जोडी,
भाषा और संगीत, नृत्य और कला,
इनसे ही मिलती है, हमें पहचान प्यारा।

जब मिलते हैं हम एक साथ,
त्यौहारों की धूम मचती है बार-बार,
दीवाली की रौशनी, होली का रंग,
संस्कृति में बसती है सभी का संग।

सस्कृति की गहराई में छुपा है ज्ञान,
हर एक संस्कार, बनाता हमे महान,
परिवार की नींव, समाज का आधार,
सस्कृति की महिमा है अद्वितीय अपार।

आधुनिकता में कही न खो जाए,
अपनी जड़ो को हमेशा याद बनाएँ,
संस्कृति की रोशनी से जगमगाएं,
इस अनमोल धरोहर को सजोंए।

हम सबका कर्तव्य है इसे निभाना,
संस्कृति को आगे बढ़ाना और सहेजना,
अपने बच्चों को दे इसकी पहचान,
ताकि हर पीढ़ी करे इसका सम्मान।

- गरिमा
प्रोजेक्ट एसोसिएट-I
विभाग : एसडीडीएम
प्रोत्साहन पुरस्कार विजेता
रा.न.प्र नोएडा कार्यालय, उत्तर प्रदेश

*****

नवाचार

आओ नवाचार से, अपनी पहचान बनाएं

नये विकास की राह पर, हमे सब को साथ बढाना है,
नये विचारों से जीवन को, अब नई दिशा दिखाना है।

प्रौद्योगिकी का दीप जलाकर, हर अंधकार मिटाना है,
नवीनतम आविष्कारो से, देश को ऊंचाई पर लाना है।

शिक्षा के हर द्वार खोले, शान की ज्योति जलायें,
रोजगार के अवसर दें, सबको हुनरमंद बनाएं।

खेती में हो तकनीक नई, किसान का जीवन सुधरे,
फसले लहरायें हर खेत में, हर घर में खुशियां बिखरे।

एकता और भाईचारे से, समाज को ऊंचा उठाना है,
सबको समान अवसर देकर, नई दुनिया बनाना है।

आओ नवाचार से, अपनी पहचान बनाएं,
विश्व पटल पर हमसब मिलकर, भारत का मान बढाएं।

शिक्षा में हो विकास नया, रोजगार का द्वार खुल जाएं,
हर हाथ को काम मिले, देश तरक्की से भर जाए।

आकर्षक हो नई सोच, उत्साह हो सबके मन में,
बदलाव की सच्ची शक्ति हो, जो भरदे जीवन को रंग में।

- डॉ. मोहम्मद रईस शेख
रिसर्च एसोसिएट-I
विभाग : एसडीडीएम
प्रोत्साहन पुरस्कार विजेता
रा. न. प्र. मुख्यालय गांधीनगर, गुजरात

*****

संस्कृति

भारतीय संस्कृति

गंगा की धारा, हिमालय की छाया,
हर कण में बसी है, माँ भारती की माया,
अतिथि देवो भवः की सिखाती ये परंपरा,
नफरत को हराकर, भेदभाव मिटाने की सभ्यता।

नालंदा-तक्षशिला से फैला जो ज्ञान,
विज्ञान के पथ पर बढाया अपना मान,
चन्द्रमा पर दृष्टि डाली, नक्षत्रों का ज्ञान पाया,
आयुर्वेद से रोग मिटाया, जीवन को अमृत बनाया।

नवाचार की राह पर, बढ़ी जो संस्कृति हमारी,
विज्ञान संग कदम मिलाकर, गढ़ी नई दुनियादारी,
वेदों में था बीज छिपा, ज्ञान और विज्ञान का,
खगोल का रहस्य खोला, ऋषियों के अनुमान सा।

कृषि क्षेत्र में हरित क्रांति लाकर,
वैज्ञानिकों ने नई रीत बनाई,
जैविक उपचार और औषधी बनाकर,
धरती के उपजाऊ स्वर्ण चिड़िया कहलाई।

हर खोज में थी हमारे संस्कृति की छाप,
जिस पर नवाचार ने खोली ज्ञान की धूप,
संस्कृति और विज्ञान जब साथ बढ़े,
हर कठिनाई से भारत लड़े।

एक धरती, एक आकाश, एक मानवता का संदेश,
हमारी भारतीय संस्कृति देती विश्व को नव निर्देश,
सामुहिक विकास का आवाहन दिया,
विश्वगुरु के ओहदे पर अपना दावा जमाया।

मेरा देश महान। जय हिन्द। जय भारत ।

- डॉ. मौमिता साहू
रिसर्च एसोसिएट-III
विभाग : एसडीडीएम
प्रोत्साहन पुरस्कार विजेता
रा.न.प्र भुवनेश्वर कार्यालय, ओडिशा

*****

नवाचार

नवाचार का ये सफर

चुप्पी में छुपे, नए ख्वाबों का जाल,
सपनों की दुनिया, करती है कमाल।

सोच में जब आए बदलाव, बन जाए नया सवेरा,
नवाचार का ये सफर, लाए जग में एक नया नजारा।

विज्ञान की बातें हों, या कला की नई लकीर,
हर कदम पर चलकर, बनाएँगे एक नयी तस्वीर।

दृढ संकल्प से सजी है, हर मुश्किल की राह,
हर चुनौती में छुपा है, देश का विकास।

हर विचार में छिपा है, एक अनमोल राज,
जो खोले नए दरवाजे, बनाए जीवन का स्वाद।

आओ हम सब मिलकर, एक नई दिशा की ओर,
नवाचार का यह सागर, लाए सबको अमिट जोर।

हर दिल में हो आशा, हर मन में हो आग,
नवाचार का यह प्रकाश, बने जीवन का राग।

- पारुल सिंह
प्रोजेक्ट एसोसिएट-I
विभाग : इंस्पायर - मानक
रा.न.प्र नोएडा कार्यालय, उत्तर प्रदेश

*****

नवाचार

नवाचार है प्रगति का आधार

नवाचार है प्रगति का आधार,
समस्याओं का हल, नए सपने का द्वार।

नवाचार का पथ, है सजृन को नई राह,
इसकी सफलता, है सभी के प्रयासों में समाहित,
नए विचार, नई सोच का हो विस्तार।

जब हर गाँवों मझोला में हो नवाचार,
आओ मिलकर नवाचार अपनाएं,
विकास की इस धारा में, नए कीर्तिमान गढ़ जाये।

नवाचार से ही हम पायेंगें नई ऊँचाईयां,
कदम पर उभर देगी, नई संभावनाएं, नई सजृनात्मकता।

- अभियंता अबिनाश सामल
वरिष्ठ परियोजना सहयोगी
विभाग: वार्ड और आईपीएम - इंजीनियरिंग
रा.न.प्र भुवनेश्वर कार्यालय, ओडिशा

*****

नवाचार

नवाचार से मुमकिन

है क्रांति मुमकिन, है शांति मुमकिन,
अगर है सोच रचनात्मक, तो है हर बात मुमकिन।

हो गहरी खाई, या पर्वत की ऊंचाई,
इन सबको है नापना, है आज मुमकिन।

है चाँद पर जाना, या समुद्र पे घर बनाना,
कभी तो था किसी का सपना,
कर दिया कई बार मुमकिन।

हो स्वयं की समस्या, या हो जरूरी नयी समाज की संरचना
नीति या राजनीति, हर पहलू में है, नवाचार मुमकिन।

मेरी पढ़ाई हो रही थी मुश्किल, घर से दूर जाना नही था संभव,
आयी इनफार्मेशन टेकनोलॉजी और नई शिक्षा नीति,
हुई आज मेरी पढ़ाई मुमकिन।

किसी का था सपना उड़ने का,
किसी को था अपनी आवाज़ दूर तक पहुँचाना,
एक नवाचारक के निरंतर प्रयत्न और अटूट विश्वास,
ने लाई ऐसी लहर, किया नवयुग का सृजन।

इच्छाएँ हैं, आशाएँ हैं, पर संसाधन अपार नही ,
हो रहा प्रयत्न की करे पृथ्वी-पृथ्वी की संसाधन का संरक्षण,
क्या हम मिल कर पाएंगे ये मुमकिन,

एक समृद्ध युग की कल्पना, दे रही है पुकार,
चलो नवाचार में लेकर करे ये मुमकिन।

- डॉ. दीप ज्योति फ्रांसिस
वरिष्ठ परियोजना सहयोगी
विभाग : इंस्पायर- मानक
रा. न. प्र. मुख्यालय गांधीनगर, गुजरात

*****

संस्कृति

संस्कृति और तकनीक

सपनों के इस सुन्दर सफर में,
हर कदम जीत की और बढ़े,
नवप्रवर्तन की शक्ति संग,
तकनीक की लौ से दीप जले।

साथ मिलकर चलें सब राह पर,
संस्कृति की धारा में बढ़े कदम,
नये भारत का सपना साकार हो,
नव आयाम हुए हर जन।

हर नवाचार में छिपा है स्वप्न,
आत्मनिर्भरता का संदेश प्रबल,
हम गर्व से आगे बढे निरंतर,
स्वर्णिम भविष्य की और चलें सब मिलकर।

नये सवेरे की किरण संग,
नव भारत का निर्माण हो,
संस्कृति और तकनीक संगम से,
नवयुग का आह्वान हो।

युवाओं, उड़ाओ सपनो के पंख,
तकनीकी क्रान्ति संग बढाओ कदम,
हम सब का सपना भी पुरा हो,
और हम जुड़े रहे अपनी धरती संग।

संस्कृति की जड़ों से रोज नई शक्ति लें,
नई तकनीक से ऊँची-ऊँची उड़ान भरे,
मिलकर नव भारत का निर्माण करे,
हर क्षेत्र में कदम कार्यरत रहे।

जय हिन्द। जय भारत। हो सदा,
नवाचार और संस्कृति संग,
हर सपने मिलकर करे साकार,
भारत बने सशक्त, आत्मनिर्भर और परोपकार।

- श्री सुनील कुमार भास्कर
प्रोजेक्ट एसोसिएट-II
विभाग : इंस्पायर- मानक
रा.न.प्र नोएडा कार्यालय, उत्तर प्रदेश

*****

संस्कृति

भारत की संस्कृति ने रचा इतिहास

जब माँ सीता ने चुना वनवास,
भारत की संस्कृति ने रचा एक इतिहास,
पवित्रता की तय हुई व्याख्या और,
रामायण बनी संबंधों की मार्गदर्शिता।

जब द्रौपदी के साथ हुआ अत्याचार,
कृष्ण ने सिखाया जीवन का ज्ञान,
गीता बनी जीवन का आधार,
और कृष्ण बने हर गोपी का प्यार।

जब अहिल्या ने छेडा युद्ध,
स्त्री शिक्षा का खुला मार्ग,
अंबेडकर ने उठायी आवाज और,
समाज ने देखी समानता की राह।

महात्मा ने सिखाया दया का ज्ञान,
और करुणास्त्र बना युवा का हथियार,

धन्य है वो भारत भूमि, जहाँ दया ही है धर्म महान और,
चरित्र ही है मनुष्य की पहचान।

- धरा पटेल
वरिष्ठ परियोजना सहयोगी
विभाग : इंस्पायर- मानक
रा. न. प्र. मुख्यालय गांधीनगर, गुजरात

*****

संस्कृति

भारत की संस्कृति

सोच-सोच कर जब लिखना चाहा तो शब्द न उमड़ आए,
कि किस तरह संस्कृति की परिभाषा दी जाए...,
संस्कारों की नींद में बसी है, हमारे भारत देश की शान,
माता-पिता और बुजुर्गों का, जहाँ करते सभी सम्मान।

मौसम भी जहाँ विविधता को निहारें...,
एक देश में ओस, गर्मी और बारिश की बहारें,
कला, नृत्य, नाट्य और भी ढेर सारे है विकल्प,
रंग-बिरंगे रीत और पोषाक कभी होते ना अल्प..।

लेकिन ऐसी निराली संस्कृति को साथ बैठ निहारने का वक़्त उड़ चला,
अब तो इसान, इंसान से दूर हो चला।
होली, दीपावली पर घर जाना, मौज करना, अब कुछ न हो रहा विराम,
साथ मिलकर मिठाईयाँ खाना, घंटो बतियाना,
और नाट्य देखना, मानो लग गया हो पूर्णविराम।

विभिन्न त्योहारों में रखों उपवास, या फिर हो व्रत चौथ का,
संस्कृति बिखेरने वाले अक्सर कहने लगे - क्यों किसी,
और के लिए रहना बिना अन्न, पानी का?

सम्मान की बात रट कर बोलते है सब,
लेकिन - देख लो यदि वृद्धाश्रमों को तो अपने,
भी पहचानने से इन्कार करें... क्या करें आदि पर रंध ?

चार दिन छुट्टी मिलते ही मनुष्य चाहता एकांत,
और करता शहरों की सैर,
लेकिन अपनो के साथ, रिश्तेदारों संग उनके,
शहर तो लगा हो मानो सैर।

आओ मिल कर अपनाएँ... याद करें और करवाएँ,
अपने बड़ों से सीखा, वो अमल करें, और बच्चों को सिखाएँ...
वरना किसी प्राणि कि तरह संस्कृति भारत की हो जाएगी विलुप्त,
और मनुष्य, दोस्त, रिश्तेदार, हमारे हो जाएगें सब अपने गुप्त ...
हमारे अपने ही हो जाएगें गुप्त।

- डॉ. नेहा तवकर
रिसर्च एसोसिएट-III
विभाग : सूचना प्रौद्योगिकी और संचार
रा. न. प्र. मुख्यालय गांधीनगर, गुजरात

*****

संस्कृति

भारत की संस्कृति अनुपम

भारत की संस्कृति अनुपम,
सात रंगों का संगम,
धरती पर हर रंग बिखरा,
सद्भावना का मधुर हंसगान।

धर्म भाषा रीति-रिवाज,
सभी में बसी है एक आवाज,
संस्कृति का अनुपम आलोक,
जोड़े सबको, यही है इसका सेरभ।

नृत्य संगीत कला की धारा,
हर दिल में बसी है प्यारी गाथा,
अद्भुत है यह संस्कृति हमारी,
जग में अनोखी, न्यारी-न्यारी।

- श्री सुभदीप बनर्जी
वरिष्ठ परियोजना सहयोगी
विभाग : एसडीडीएम
रा.न.प्र भुवनेश्वर कार्यालय, ओडिशा

*****

राजभाषा हिन्दी और विज्ञान

हिन्दी हमारी पहचान

हिन्दी हमारी पहचान है,
विरासत संमेटी हुए सांस्कृतिक जान है।

यह सेतु है संस्कृतियों की,
पूरक है भारत की भाषाओं का,
यह बढ़ती रही, जब विचार धार में टकराती रही,
यह फैलती रही, जब जड़े काटने की कोशिश रही,
विदेशीयों ने हिन्दी मिटाने की प्रयास किया,
पर जो बसी है पहचान, हिन्दी है ही हिन्दुस्तान,
आज पश्चिम का रंग छाया है,
बेतुकी शान ने हिन्दी को ही बनाया पराया है,
कब जानेगें की हिन्दी आत्मा में समाया है,
बोलने में सरल और हर मन को भाया है,
आज के समय में विज्ञान और शिक्षा का दौर है,
क्यूँ भाग रहे अंग्रेजी में, जब हिन्दी में समाया है,
जगाओ आत्म-गौरव को, चिंतन करो समृद्ध विरासत के,
समाओ हिन्दी को दिनचर्या में जुड़ाओ अपनी पहचान से।

हिन्दी हमारी पहचान है,
विरासत समेटी हुई सांस्कृतिक जान है।

- श्री अनंत कुमार गुप्ता
वरिष्ठ परियोजना सहयोगी
विभाग : इंस्पायर-मानक
रा.न.प्र नोएडा कार्यालय, उत्तर प्रदेश

*****

कृषि

स्वर्णाली तन्तु

रास्ते में अचानक मैंने उसे देखा-
काजला दीघी में लहरें उठा,
मैं एक मोड़ पर खड़ा था,
शांत सुनीबीर गांव में, छांव में।

मैंने बोला, "तुम क्या कर रहे हो?"
वह मुस्कुराते हुए बोले, "अच्छा देखो,
यह स्वर्णाली तंतु है, मैं इसे धो रहा हूं।
लहरें फिर उठती हैं, पानी की बूँदें गिरती हैं।

हरे पौधे उगते हैं, पेड़ बड़े होते हैं,
पेड़ पानी में सड़ जाते हैं, छड़े जमा हो जाती है,
तंतुओं को पानी में धोना पड़ता हैं,
उजागर पीठ फिर पसीने से भीग जाती है।

यह जल क्रीड़ा जब खत्म हो जाती है,
मेहनत, खुशी की किरणें में बदल जाती है।

- श्री सायंतन धर
प्रोजेक्ट एसोसिएट-II
विभाग : एसडीडीएम
रा.न.प्र गुवाहाटी कार्यालय, असम

*****

कृषि

कृषि, जो कि किसान के बिना है अधूरी

धरती माँ की गोद में उपजता है अनाज,
किसान की पसीने की बूंद से बनता है ये अनाज।

जहाँ सूरज की किरणें और वर्षा देती है किसान का साथ।
वहीं से होता है इस देश का विकास।

बीजों की महक से महकती है धरा,
हर एक ऋतु लाती है नया सवेरा।

हम ए.सी. में बैठे करते है गर्मी का जिक्र,
लेकिन किसान अपनी मेहनत से करते है जनता की फिक्र।

कृषि है देश की धरोहर, संस्कृति का है मान,
इसलिए अन्न फेंक कर न करे इसका अपमान।

किसान, फसल की कटाई के लिए महीनों करता है इंतजार,
तो थाली में उतना ही परोसे कि अन्न भी न करें,
कूड़े में जाने का इंतजार।

“अन्न ही जीवन है, अन्न ही ईश्वर है, आओ इसका सम्मान करें।"

- दीप्ति जगूड़ी
पद : प्रोजेक्ट एसोसिएट-I
विभाग : प्रसार और सामाजिक प्रसार
रा.न.प्र नोएडा कार्यालय, उत्तर प्रदेश

*****

कृषि

कृषि, अस्तित्व का आधार

नदियों का संगम मिट्टी का प्यार,
धरती के लाल का परिश्रमी दुलार,
सृष्टि पोषण ही मेरे अस्तित्व का आधार।

बीज में जीवन धर, एक से अनेक कर,
बांटी है खुशियाँ झोंलीयां भर-भर,
डर है इंसानी गलतियों से जाउना में भर।

पर उपकरणों का व्यापारी मेरे अस्तित्व को झूठलाता हैं,
उपकारों को भूलकर अँधा माँ को जहर पिलाता है,
मिट्टी चाट उगाया सोना, बस उनमें कृषिप्रधान बन इठलाता हैं।

ताप, वर्षा, कहर में भी किसान ने नहीं छोडा,
पर मोलभाव की राजनीति ने कमर को उनकी तोड़ा,
लगाया अचूक बन रोड़ा, बर्बादी की तरफ एक मोड़ा।

समझपूर्ण संस्कृतिक आचरण तोड़ेगा यह शाप,
प्राप्त होगा नवजीवन करके जैविक कृषि का जाप,
देशी बीज, देशी खाद, रहें मेरी असीम शक्ति का परियाय।

सदा लहराता जीवन मेरा है धरती की सांस,
शुरु अन्न-जल, शुद्ध वायु रहे हमेशा पास,
देश विकास में हरा योगदान है ये कृषि की आस।

- डॉ. पार्थकुमार पी. दवे
रिसर्च एसोसिएट-III
विभाग : वार्ड और आईपीएम - कृषि
रा.न.प्र नोएडा कार्यालय, उत्तर प्रदेश

*****

कृषि

कृषि हमारी पहचान

कृषि से है देश मेरा,
कृषि हमारी पहचान है।
आधुनिक भारत का अभियंता हूँ मैं,
कृषि अब मेरी जिम्मेदारी है।

कृषि में नवाचार लाकर,
इसे शून्य से शिखर पहुंचाना,
परम् कर्तव्य है हमारा।

है गर्व हमें, हमारी कार्यकारणी पर,
राष्ट्रीय नवप्रर्वतन के हम कर्मचारी है,
जिसका कर्म रहा सदैव, कृषि में प्रौद्योगिकी लाना है।

वैज्ञानिक निभा रहे अपनी जिम्मेदारी है,
तृणमूल को जड़ से उठा कर,
करा रहे अंबर की सैर हैं।

कृषि से है देश मेरा, कृषि अब मेरी जिम्मेदारी है।

- अभियंता सुमित रघुवंशी
प्रोजेक्ट एसोसिएट-I
विभाग : वार्ड और आईपीएम - इंजीनियरिंग
रा. न. प्र. मुख्यालय गांधीनगर, गुजरात

*****

कृषि

कृषि और किसान

कड़ी धूप में तपता किसान,
मेहनत से भरता है खेतों में जान,
बूंद-बूंद पसीना बहाता,
धरती माँ को हरा भरा बनाता।

बीजों में सपने बोता,
हर फसल में जीवन खोजता।
बारिश की राह देखता,
हर मौसम से वो लड़ता।

कभी सूखा, कभी बाढ,
फिर भी न मानता हार,
कृषि है उसकी पूजा,
धरती है उसका मंदिर।

फसलें जब लहराती खेतों में,
बारिश की बौछार बहती,
किसान की मेहनत रंग लाती,
हर घर में खुशहाली छाती।

कृषि है, जीवन का आधार,
किसान है देश का उद्धार,
उसकी मेहनत को सलाम,
जो हमें देता है अन्न का दान।

- डॉ. कांति पटेल
रिसर्च एसोसिएट-III
विभाग : एसडीडीएम
रा. न. प्र. मुख्यालय गांधीनगर, गुजरात

*****

कृषि

कृषि से पहचान

किसान कि मेहनत से बढ़ती हैं खेती,
देश की अर्थव्यस्था को मिलती है मजबूती।

भारत की जान है कृषि की पहचान है,
ग्रामीण जीवन का यही आधार है।

कृषि से ही जीवन की आस है ,
भविष्य की उमंगे इसमे बसी हैं।

कृषि की मदद से खिलता है जीवन,
उनकी फसल से संसार हरा भरा है।

कृषि की भूमि पर खिलता है सपना,
फसल की ज्यादा पैदावार से खुशियाँ मना।

कृषि देश की आत्मा है,
इसकी रक्षा हमारा कर्तव्य है।

विज्ञान से होता है कृषि का विकास,
फसल का रहता है ज्यादा विकास।

शान और प्रगति का साधन,
विज्ञान है हमारा मार्गदर्शन।

विज्ञान की शक्ति अधिक है,
मनुष्य को सशक्त बनाती है।

- अभियंता रईश मंसूरी
नेटवर्क एडमिनिस्ट्रेटर/इंजीनियर
विभाग : सूचना प्रौद्योगिकी और संचार
रा. न. प्र. मुख्यालय गांधीनगर, गुजरात

*****

कृषि

बचपन की याद

बचपन की याद आती हैं.....
जब पड़ोस के दादाजी धान कूटने साथ ले जाते थे,
बैल के पीछे हम बच्चों को भी घूमाते थे।

उस टप-टप आवाज में गावों की, कई पुराने किस्सें गूंजती थे,
रात को भूत का यही ले आते थे।

दादी पानी भात् के साथ कांदा भूनके खिलाती थी,
खाने के साथ प्यार की मीठी धोल पिलाती थी।

शाम को बुआ धान को भांप देती थी,
चूल्हे में आलू सेक के सामने परोसती थी।

धुएं का वो महक, आज भी मेरे मन में बसती है,
मैं बच्चा अनजान कृषि से, तब शायद ऐसे ही परिचित हुई थी।

बड़ी हुई तो पता चला, कृषि कितनी जरूरी हैं,
रोटी, कपड़ा, मकान सबकी जरूरत, यही तो पूरी करती है।

कृषि में देश की आत्मा बसती है तो, कृषक इसका आधार हैं,
इनको जब जरूरत हमारी, हमें साथ खड़ा होना है।

बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण, देश में नवाचार की जरूरत है,
नवाचार की नाम पे धरती का नुक्सान ना करनी है,
देश हमारी हर दिशा में आगे बढ़े ये हमारी जरूरत है,
कृषक का बेटा जब कृषक बने तो उसमे हमारी जीत है।

- प्रज्ञा ऋतपर्णा
वरिष्ठ परियोजना सहयोगी
विभाग : एसडीडीएम
रा.न.प्र भुवनेश्वर कार्यालय, ओडिशा

*****

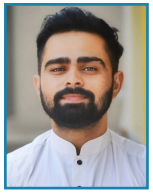

जैव विविधता

जैव विविधता निरंतर चलता रहे

हाथो में हाथ डाल कर, जैव विविधता का चक्र चलता रहे,
यह धरती सबकी है, इस पर अधिकार सबका रहे।

कीट पतंगो का भी इसमें, एक समान स्थान रहे,
बिना उनके संभव ना कुछ भी, उसका भी अनुमान रहे।

सिंह-मांस और रक्त के लोभ से, इंसान अब थोड़ा दूर रहे,
दूध, उन और बोझ उठाते, फिर भी क्यो कम पडता रहे।

शेर/तेदुए बस्तियों में ना कभी घुसना चाहते,
पर इंसान को भी अपनी सीमाओ का भान रहे।

घर के छज्जों में भी जगह हमें देनी होगी,
क्योंकि दरख्तो में भी उनके घरोंदे/घोंसले ना रहे।

परिचित समस्या से सब है लेकिन,
एकाद पशु चाल के पशु प्रेम का दिखावा सब कर रहे।

अपने कुकर्मों का भाव उनके सर ना देके,
पशु-प्रेम के भाव को इंसान बस अपने दिल में रखे।

जैव विविधता को कायम रखने, सबका सहयोग यूं ही लढता रहे,
हाथों मे हाथ डाल कर, जैव विविधता का चक्र निरंतर चलता रहे।

- श्री विरल चौधरी
वरिष्ठ परियोजना सहयोगी
विभाग : इंस्पायर-मानक
रा. न. प्र. मुख्यालय गांधीनगर, गुजरात

*****

जैव विविधता

जैव विविधता में जीवन चक्र

सूक्ष्मजीव, फल फूल पौधे,
औषधि वनस्पति और पशु-पक्षी,
जैव विविधता की परिभाषा है ये सब,
जीवन चक्र के घटक - मनुष्य और प्राणी।

धरती के कण-कण में है सृजनशीलता,
पर्यावरण का है अनमोल प्रभाव,
सतत विकास और संरक्षण का है समय,
वरना निश्चित है अमुल्य संपदा का अभाव।

आओं मिलकर करे हम सब ये प्रण,
नवाचार और विज्ञान से करे प्रकृति का रक्षण,
प्रदूषण से बचें, करें स्वच्छता की पहल,
आने वाली पीढ़ी का करें भविष्य उज्ज्वल कीजिएगा।

- डॉ. रश्मि गहाणे
रिसर्च एसोसिएट-II
विभाग : एसडीडीएम
रा. न. प्र. मुख्यालय गांधीनगर, गुजरात

*****

जैव विविधता

जैव विविधता के रूप अनेक

जैव विविधता कई चीजें हैं,
पक्षी, पेड, फल,
हर चीज़, हर चीज़ में मदद करते हैं,
घंटों बैठ कर देखते रहो।

रॉबिनस, गौरैया, मल्लार्ड और ब्लैकबर्ड,
क्या सभी भी इसका हिस्सा है,
ऐसा लगता है कि यह सब, शब्दों में कह सकते हैं,
लेकिन फिर आप नहीं चाहते।

किसी चीज़ की सुंदरता क्यों नष्ट की जाए,
बस इतना ही कि आप कह सकें,
मैं शहर में घूमने गया,
और आज एक फूल देखा।

- श्री समीर फ़ैयाज़
वरिष्ठ परियोजना सहयोगी
विभाग : एसडीडीएम
रा.न.प्र जम्मू और कश्मीर कार्यालय

*****

जैव विविधता

जैव विविधता हैं अनमोल

क्या यह अच्छा नहीं है जब हम स्कूल जाते हैं,
पक्षी चहचहाते हैं और मौसम बदल जाते हैं,
वे सभी अलग-अलग प्रजातियाँ हैं जो आप देखते हैं,
जानवर भोजन देते हैं और यह "जैव विविधता" कहलाती है,
और उनके बिना हम मर गए होते।

हम सभी एक दूसरे से जुड़े हैं,
जंगल की खाद्य श्रृंखला से,
जिनके बिना हमारा भोजन गायब हो जाएगा।

हमें पौधों की जरूरत है,
वे हमें भोजन देते हैं,
और उनके बिना हम खो जाएंगे।

“हमेशा हमारी मदद करते हैं,"
पेड़ हर जगह रो रहे हैं, क्योंकि हवा साफ नहीं है,
दिन हरा नहीं है,
मनुष्य ऑक्सीजन का उपयोग करते हैं,
"प्रिय माँ" का शोषण किया,
हमारे सभी संसाधनों का उपभोग किया।

वे हमें पौधे देते हैं,
वे हमें पेड देते हैं,
वे हमें बढ़ने देते हैं,
कहते हैं, “हमारी जरूरतों के लिए उगाओ,
अपने स्वार्थी जीवन के लिए नहीं।"

इसे प्रदूषित मत करो,
भोजन और आश्रय को प्रदूषित मत करो,
इसे सलाम करो,
पेड़ पृथ्वी को हरा बनाते हैं,
“प्लास्टिक को ना कहो।"

कृपया विविधता को संरक्षित करें,
क्योंकि हर रूप अद्वितीय है,
हमारी जैव विविधता हमारे लिए महत्वपूर्ण है।

तो चलो सभी को गले लगाओ,
सच को बताओ,
“जैव विविधता" अनमोल है।
तो चलो एक साथ जैव विविधता का जश्न मनाएं,
और इसे संरक्षित करें।

- डॉ. महिमा के
रिसर्च एसोसिएट-III
विभाग : इंस्पायर-मानक,
रा.न.प्र नोएडा कार्यालय, उत्तर प्रदेश

*****

जैव विविधता

पूर्वोत्तर से बुलावा

हम पहाड़ी हैं पूर्वोत्तर की है,
झूम खेती हमारा जीवन रेखा है,
जैव विविधता हमारा प्रतीक है,
हम सपना देखते हैं खेत खदियानी की,
हरी भरी जंगल के, जैव विविधता के।

हम पहाड़ी हैं पूर्वोत्तर की है,
हमारी सड़के खराब हैं,
आधुनिक उपकरणों की कमी हैं,
हमारे पास कूटनीति की भी कमी हैं,
फिर भी हम खुशहाल है,
हम पहाड़ी हैं पूर्वोत्तर की है।

हम प्राचीन है, नहीं जानते कि कृत्रिम बुद्धिमता क्या है,
लेकिन फिर भी हम भी भारतीय है।

कभी हमें भी मिलने आना यारा,
काजीरंगा में एक सींग वाला गैंडा दिखाएंगे,
और दिखाएंगे सुंदर ऑर्किड,
और दिखाएंगे रंगीन आदिवासी जीवन गाथा,
अगर पसीना आ जायेंगे तो, आकाशी गंगा में स्नान भी करायेंगे,
फिर भी हमें मिलने आना यारा, हम पहाड़ी हैं पूर्वोत्तर की है...

कृपया हमें ना भूलना, हम भी आपके साथी हैं,
हम भी भारतीय हैं , हम पहाड़ी हैं पूर्वोत्तर वाले हैं ...

- डॉ. राजीव मिलि
रिसर्च एसोसिएट-III
विभाग : एसडीडीएम
रा.न.प्र गुवाहाटी कार्यालय, असम

*****

जैव विविधता

पेड़ बनना चाहता हूं

मैं एक पेड़ बनना चाहता हूँ,
जिसका जड़ें पर होगा अनुभव,
जिसके फूलों में प्रकृति का सर समाहित होगा,
जिसके फलों में आने वाली पीढ़ियाँ छपा रहेगी,
तूफान की चेट सूखे पत्तों पर पड़ेगी, जीवन का संघर्ष छाप रहेगी।

आज मेरे शरीर में नये पत्ते नहीं उगते,
परछाई बनकर खुद को जला रहा हूं, पर दूसरों को ओस में हूं,
सुन ए मानव तुम्हारा जो भी श्रम है,
उसे मैं पीले पत्तों के पीछे छुपा लूंगा,
शायद एक दिन में जंगल की आग या वासना का शिकार हो जाऊंगा,
फिर भी मैं पेड़ बनना चाहता हूं।

- श्री पिंटू हाटी
वरिष्ठ परियोजना सहयोगी
विभाग : प्रसार और सामाजिक प्रसार
रा.न.प्र गुवाहाटी कार्यालय, असम

*****

जैव विविधता

धरा कथा

सुनो जरा कथा, मैं हूँ धरा।
मैं अजन्मी उत्पन्न अविनाशी विध्वंश सबका।

मुझसे जन्मे, मुझसे सीखे, नए कुछ विचार,
विचार..... जो मुझको चीरे, मुझको सांधे,
मुझको खोदे, मुझको बाँधें,
मन को विचलित करे विचार।

न सीखी कोई बात, ना सीखा कोई राग,
सदैव सिखा देना मेरे पुत्रों का साथ,
परिवर्तन निर्माण, सबका साथ मेरा भी विकास,
ये सोच मैं विचलित चलित में आज।

क्या पाया मैंने तुमसे, कुछ लिया था जो तुमसे,
दिया था जो तुमको, सब अन्न चुनके,
अपने मोह में संगे (रंगे), आज तुम भी हो मुश्किल में।
ये सोच में विचलित चलित मैं आज।

जीव हो तुम, जीवन दाता हूँ मैं,
मूल्य करो, फल लगाता उगाता हूँ मैं,
संभालो खुदको, तो लहराऊँ आंचल,
रोका नहीं खुद को तो मचाऊ तांडव,
ये सोच मैं विचलित चलित में आज।

- अभियंता ममता नायका
रिसर्च एसोसिएट-I
विभाग : वार्ड और आईपीआर - इंजीनियरिंग
रा. न. प्र. मुख्यालय गांधीनगर, गुजरात

*****

हिंदी पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस 2024

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष था, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हुए। भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषायी विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता आया है। भारत की सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देने में क्षेत्रीय भाषाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी जैसे महान नेताओं ने हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आजादी के बाद हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया और संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया गया ।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरू नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन - वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से बनी है। हिंदी भाषा इन मातृ भाषाओं को संरक्षित रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो रही है।

हिंदी दिवस का महत्व और इतिहास बहुत समृद्ध है। यह दिवस हर साल 14 सितंबर को मनाया जाता है, जिस दिन 1949 में भारत की संविधान सभा ने हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया था। हिंदी का इतिहास बहुत पुराना है, और इसका विकास कई सदियों में हुआ है। महात्मा गांधी ने 1918 में हिंदी साहित्य सम्मेलन में हिंदी को राष्ट्रभाषा और जनमानस की भाषा कहा था। हिंदी दिवस का उद्देश्य हिंदी भाषा को बढ़ावा देना और इसके महत्व को समझाना है। यह दिवस हमें अपनी राजभाषा के प्रति गर्व और जिम्मेदारी की याद दिलाता है। आज, हिंदी दुनिया भर में चौथी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है, लेकिन इसके बावजूद, लोगों में इसको अच्छी तरह से समझने, पढ़ने और लिखने वालों की संख्या कम हो रही है। इसलिए, हिंदी दिवस का आयोजन प्रतिवर्ष सितंबर महीने में किया जाता है, जिसमें विभिन्न कार्यक्रम, प्रतियोगिताएं और सेमिनार आयोजित किए जाते हैं।

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत में हिन्दी पखवाड़ा और हिन्दी दिवस मनाने की एक गौरवशाली परम्परा रही है। यह संस्थान राजभाषा नियमों की परिपालना वर्ष भर करता रहता है और विभिन्न अवसरों पर इसके बारे में प्रचार-प्रसार भी करता है। इस अवसर पर रानप्र ने हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया, जिसमें 13 सितंबर से 27 सितंबर 2024 के बीच कई प्रतियोगिताएं और गतिविधियां आयोजित की गईं। हिन्दी दिवस का मुख्य उद्देश्य हिन्दी भाषा के महत्व को समझाना और लोगों को इसके प्रति जागरूक करना है। यह दिवस हमें अपनी राजभाषा के प्रति गर्व और जिम्मेदारी की याद दिलाता है।

*****

हिंदी पखवाड़ा 2024

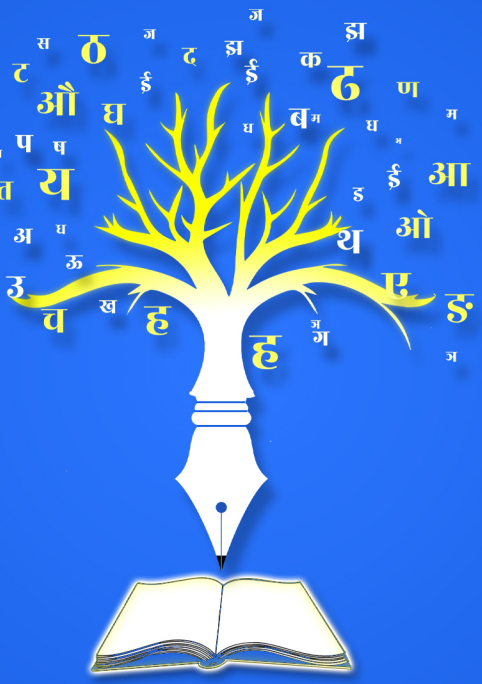

काव्य संकलन

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग
DEPARTMENT OF
SCIENCE & TECHNOLOGY

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान - भारत
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान
National Innovation Foundation - India
Autonomous Institute of the Department of Science and Technology, Govt. of India